5

मौर्य एवं उत्तर-मौर्यकला

पिछले पाठ में हमने सिंधु घाटी सभ्यता के मूर्तिशिल्प के बारे में पढ़ा। इस पाठ में मौर्य एवं उत्तर-मौर्यकाल की कला के बारे में पढ़ेंगे। मौर्य काल, वास्तव में कलाओं के फलने-फूलने के लिए अत्यन्त अनुकूल समय था। चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक के समय में कलाओं को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। मौर्यकाल में मगध की राजधानी पाटलीपुत्र का विशेष महत्व रहा। खासतौर पर वास्तुशिल्प एवं मूर्तिशिल्प के लिए, इस काल के विकसित स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प में स्तम्भ गुफा मंदिर, मूर्तियाँ तथा स्तूप विशेष उल्लेखनीय हैं। मौर्यकाल में नर-नारी, देवी-देवताओं, राजाओं, वनस्पति, पशु तथा पक्षियों की मूर्तियों का निर्माण हुआ। इन मूर्तियों में भाव अभिव्यक्ति, सुन्दरता, सुरुचिपूर्ण गठन आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। मौर्यकालीन मूर्तियों पर एक विशेष प्रकार की पॉलिश दिखाई देती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- मौर्यकालीन मूर्तिकला के विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- मौर्यकालीन मूर्तिकला की विषयवस्तु एवं तकनीक की जानकारी दे सकेंगे;
- कुषाण मूर्तिकला के विषय, तकनीक और प्रारूप की व्याख्या कर सकेंगे;
- आंध्र की मूर्तिकला के रूप और तकनीक पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- उत्तर-मौर्यकालीन, गंधारकला की उत्पत्ति और विकास के बारे में लिख सकेंगे;
- गंधार, मथुरा एवं आंध्र की कलाओं में समानता और अंतर प्रस्तुत कर सकेंगे।

मौर्य एवं मौर्योत्तर कला का परिचय

इस काल के छोटे आकार की मातृदेवी की मूर्तियाँ तथा मिट्टी की मूर्तियाँ सुपरिभाषित आकारयुक्त एवं विस्तृत तौर पर अलंकृत है। मौर्यकालीन कला के सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिल्प, अशोक कालीन

स्तम्भ हैं। इनमें अधिकांश पर महान सम्राट अशोक के धर्म सन्देश अंकित हैं। इन स्तम्भों में रचनाकार की मौलिक सृजनशीलता व तकनीक का विकास दिखाई देता है। मौर्यवंश के पतन के साथ, मौर्य साम्राज्य विघटित हो गया, जिसके साथ ही देश के विभिन्न भागों में कई अन्य राजवंश शक्तिशाली हुए। अशोक के काल में बनी विभिन्न पशुओं की सजीव मूर्तियाँ इस काल की मूर्तिकला के विकास को दर्शाती हैं। शुंगों, कण्वों और कुषाणों ने उत्तर में शासन किया, जबकि सातवाहनों ने महाराष्ट्र, आंध्र, तेलंगाना और कर्नाटक में शासन किया। पूरे भारत में मूर्तिकला संबंधी गतिविधियाँ जारी रहीं। बौद्ध धर्म, जैन धर्म और ब्राह्मणवादी हिंदू धर्मों से संबंधित मूर्तियाँ बनाई गई। सबसे उल्लेखनीय मूतियाँ प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की बौद्ध आस्था की है। कनिष्क (दूसरी शताब्दी सीई/एडी) कुषाण वंश के सबसे महान शासक, मूर्तिकला और वास्तुकला के एक अन्य संरक्षक थे। कुषाण का साम्राज्य आधुनिक अफगानिस्तान के ऑक्सस से लेकर वाराणसी तक और कश्मीर से लेकर गुजरात के तट और मालवा तक फैला हुआ था। उनके समय में गांधार कला ने गांधार क्षेत्र (पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच) में जड़ें जमा ली, जो भारतीय और यूनानी प्रभावों का रचनात्मक संश्लेषण थी। इसका विषय बौद्ध धर्म था। मूर्तिकला उत्पादन को दो अलग-अलग शैलीगत समूहों में विभाजित किया जा सकता है, एक गांधार क्षेत्र में और दूसरा गंगा घाटी में, जो कि परंपरा की निरंतरता भी थी। गांधार स्कूल ने बुद्ध के बोधिसत्व, बुद्ध और जातकों के जीवन के आख्यान पर कई चित्र बनाएँ। गांधार कला की शैली ग्रीक और रोमन परंपराओं का मिश्रण थी।

गंगा घाटी में कला उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र मथुरा था। इस क्षेत्र के मथुरा मूर्तिकारों ने हिंदू, जैन और बौद्ध मूर्तियों का एक अनमोल खजाना छोड़ दिया। उन्होंने सांची और भरहुत के मूर्तिकारों के कौशल को और निखारा। बौद्ध और जैन दोनों स्मारकों के स्तंभों और प्रवेश द्वारों पर उकेरी गई विभिन्न यक्षियों, शालभंजिकाओं, अप्सराओं और अन्य महिला आकृतियों से पता चलता है कि उन्होंने वनस्पति और पशु-पक्षियों के साथ गतिशील, कम कपड़े पहनने वाली, कामुक, अच्छी डील-डौल वाली महिला आकृतियों को गढ़ने में विशेष रुचि ली थी। विष्णु, सूर्य, कुबेर, नाग, यक्ष और राजाओं की मूतियाँ भी मथुरा कार्यशालाओं में बनाई गई। मथुरा की प्रस्तुतियों में कुषाण राजाओं के चित्र विशेष रुचिपूर्ण हैं। इस काल की मूर्ति कला में अद्वितीय शैलीगत विशेषताएँ अंकित थी।

अमरावती आंध्र प्रदेश में गुंटूर के पास स्थित है। इसमें मूर्तियों से सुसज्जित एक विशाल बौद्ध स्तूप है। मुख्य रूप से दूसरी शताब्दी ई. से संबंधित इसकी गतिविधि का परिपक्व चरण इसके मूर्तिकला विकास के लिए उल्लेखनीय है। यह भारतीय मूर्तिकाला की परंपरा में बहुत ही अलग शैलीगत विशेषताओं को दर्शाता है, आकृतियाँ दीर्घाभूत है। इनका शरीर काफी घुमावदार होता है और ये बेलनाकार और घने संयोजनयुक्त हैं। बुद्ध के कटोरे की आराधना का प्रतिनिधित्व करने वाली मूर्ति की नक्काशी को गोल पदक में उकेरा गया है।

अजंता की गुफाओं में तीन चरणों से संबंधित चित्र है। आरंभिक चित्र अजंता की गुफा संख्या 9 और 10 में पाए जाते हैं। गुफा 10 और 9 के स्तंभों पर बुद्ध के चित्र तीसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य की है, जबकि अजंता चित्रों के बाद का चरण पाँचवी शताब्दी ईस्वी का है और कई गुफाओं जैसे कि गुफा 1, 2, 16, 17 आदि में पाए जाते हैं।

5.1 चवंर धारिणी यक्षिणी

शिक्षार्थियों! आइए, सबसे पहले मौर्यकालीन मूर्तिकला के विषय में कुछ जानें।

बुनियादी सूचना

वैदिक काल से चली आ रही यक्ष पूजा की प्रथा को ब्राह्मण, जैन और बौद्ध धर्मो ने समान रूप से स्वीकार किया था। धन-धान्य, समृद्धि तथा शक्ति के प्रतीक के रूप में इनकी उपासना प्रचलित थी। साथ ही उनका सम्बन्ध अमरता, दीर्घ जीवन और उत्तम स्वास्थ्य के साथ जोड़ा जाता था और प्रत्येक ग्राम में इनका स्थान निर्मित किया जाता था। लोक-परम्परा में पूजी जाने वाली इन शक्ति सम्पन्न विशाल डीलडौल वाली मूतियों को निर्मित कर खुले मैदान में स्थापित किया जाता था। इन यक्ष मूर्तियों के निर्माण में कला की दृष्टि से एक विशेष शैली का उपयोग मौर्य काल में किया गया। यद्यपि इन मूर्तियों को चारों ओर से गढ़ा गया है, परन्तु कटाव में अलंकरण की न्यूनता है, जैसे मूर्तियों का सम्मुख दर्शन ही कलाकार का अभीष्ट है।

चित्र 5.1: चँवरधारिणी यक्षिणी

मौर्यकाल की आदमकद भारी-भरकम, बलिष्ठ मानव मूर्तियों को शैलीगत विशेषता के आधार पर एक अलग वर्ग में रखा जाता है। इस यक्ष-यक्षिणी मूर्ति की श्रेणी में 'चंवर धारिणी यक्षिणी' अपने सौन्दर्य, रूप-प्रदर्शन में भारत में ही नहीं अपितु संसार में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। चमकदार आवरण वाली बलुआ पत्थर की यह मूर्ति अपनी साज-सज्जा, वेशभूषा, अलंकरण, शारीरिक सौन्दर्य, बलिष्ठता, कोमलता, छन्दमयता में एक उच्च कोटि का नमना है। इस मूर्ति की चमकदार पॉलिश विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह चमकदार पॉलिश पत्थर को नया रूप प्रदान कर धातु जैसी चमक प्रदान करती है।

शीर्षक	:	**चँवरधारिणी यक्षिणी**
निर्माण काल	:	मौर्य काल तीसरी शताब्दी ईसवी
आकार	:	162.2 से. मी.
स्थान	:	दीदारगंज (पटना)
मूर्तिकार	:	अज्ञात
संगेह	:	पटना संग्रहालय, बिहार

सामान्य विवरण

मौर्य कला का सबसे उल्लेखनीय नमूना मानी जाने वाली यह आदमकद प्रतिमा 16.22 से.मी. ऊँची है। बालुया पत्थर के एक टुकड़े से निर्मित चंवरधारिणी यक्षिणी अपनी औपचारिक शारीरिक संरचना में एक आनुपातिक शरीर और एक अभिव्यंजक चेहरे के साथ मजबूत रूप प्रदर्शित करती हैं। इस मूर्ति की उन्नत उरोज, लचीली कमर तथा मांसपेशियों की लोचदार अभिव्यक्ति और पेट के निचले हिस्से पर उत्कृष्ट कारीगरी दिखाई गई है। उनके आभूषणों में एक हैंडबैंड, भारी कान की बालियाँ, दो लड़यों से युक्त लंबा हार पुष्ट स्तनों के मध्य समाया है। कमर में पाँच लड़ियों वाली करधनी तथा पैरों में मोटा आभूषण है। स्पष्ट रूप से एक शाही व्यक्ति की परिचारिका, उसने अपने दाहिने हाथ में चंवर पकड़ रखा है और बायाँ हाथ नहीं है। मेखला (स्कर्ट) को सिलवटों और प्लीटस के साथ सुंदर ढ़ंग से दिखाया गया है। शरीर के ऊपरी भाग को ढँकता हुआ पारदर्शी वस्त्र बाए कन्धे के ऊपर से होता हुआ नीचे पेर तक फैला हुआ है। तकनीक के तौर पर एक शिल्पकार ने सबसे मोटी छैनी द्वारा मोटे तौर पर कटिंग करते है फिर मूर्ति को बारीक संयोजन देने के लिए पतली छैनी की सहायता से धीरे-धीरे उत्कीर्ण किया जाता है। अंत में सपाट सतह को पत्थर द्वारा घिसकर चिकना किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 5.1

सुमेलित कीजिए :

1.	चँवर धारिणी यक्षिणी	(क)	मोड़ और प्लेटें
2.	मेखला	(ख)	सिरबंध
3.	आभूषण	(ग)	बलुआ पत्थर

5.2 हाथ में पिंजरा लिए यक्षिणी

अब हमलोग हाथ में पिंजरा लिए नारी आकृति यक्षिणी के बारे मे जानेंगे।

बुनियादी सूचना

प्रारंभिक कला में अनेक आकृतियाँ नारी की हैं। उनमें से कुछ को अन्यत्र यक्षिणी कहा गया है। कुषाण कालीन, मथुरा शिल्पकारों ने नारी-सौन्दर्य का यक्षिणियों स्वाभाविक किन्तु सुंदर अंकन किया है। जैन वैदिका स्तम्भों एवं बौद्ध स्तूपों की वेदिकाओं पर नारी मूर्तियाँ विभिन्न भाव-भंगिमाओं एवं मुद्राओं में प्राप्त हुई हैं। ये अपनी मुद्राओं से विभिन्न अभिप्रायों को व्यक्त कराती हैं तथा जीवन की सुखद अनुभूतियों को आभासित करती हैं। कभी नारी औंधे मुख यक्ष की पीठ पर खड़ी है, कभी अशोक वृक्ष के नीचे खड़ी वृक्ष की शाखा को झुकाकर उससे प्रफुल्लित होती है। कभी उद्यानों में नारी द्वारा पुष्प-संचय तो किसी सुन्दरी को कन्दुक-क्रीड़ा में संलग्न दर्शाया गया है। कहीं जलाशय में स्नान कर रही है, कहीं वीणा या वंशी वादन कर रही है तो कहीं नृत्य दृश्य का मनमोहक रूप प्रदर्शन है। इन दृश्यों में रत नारी-आकृतियों को अपने पूर्ण स्वछन्द और स्वाभाविक रूप में प्रदर्शित किया गया है। वैदिक स्तम्भों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ क्षेत्रीयता से

चित्र 5.2: हाथ में पिंजरा लिए यक्षी

भी प्रभावित हैं। दही बेचने वाली गोपी, ईरानी वेशभूषा में लैम्प लिए नारी का अंकन एक स्तम्भ पर हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजमहलों में रहने वाली रानियों की परिचारिकाओं को शिल्पी द्वारा मूर्त रूप दिया गया है। सौन्दर्य-प्रसाधन करती नारी के साथ श्रृंगार पेटिका लिए परिचारिका को भी दर्शाया गया है।

शीर्षक	:	**हाथ में पिंजरा लिए यक्षिणी**
माध्यम	:	लाल बलुआ पत्थर
निर्माणकाल	:	द्वितीय शताब्दी ईसवी
स्थान	:	मथुरा
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

यक्षिणियों को सामान्यतः प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में स्त्री देवताओं के रूप में देखा जाता था। स्तूप के चारों ओर वेदिका के स्तम्भों में गहरे उभार में बनाई गई यक्षिणी प्रतिमाएँ कुषाण कालीन मथुरा कला का सौन्दर्य रूप मानी जाती हैं। इनकी मादक शरीर रचना, आभूषणों से सजी आकृति, भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय विचारों के अनुरूप हैं। इस यक्षिणी आकृति को केवल शान्त त्रिभंगी मुद्रा में खड़े हुए न दिखाकर पक्षी, वृक्ष, पुष्प आदि की संगति में दिखाया गया है। त्रिभंगी मुद्रा में बनी हुई यक्षिणी की यह प्रतिमा हाथ में पिंजरा लिए लाल बलुआ पत्थर से बनी कुषाण मूर्तिकला का एक सर्वोत्तम नमूना है। मालाओं से सुसज्जित, अलंकरण, क्षीण कटि, स्थूल नितम्ब, सुकुमार नारी रूप को दर्शाया गया है। नारी आकृति में मात्र कटिप्रदेश पर वस्त्र बांधा गया है। सिर से पाँव तक भारी और घने सुन्दर आभूषणों से इसे सजाया गया है। यह नारी आकृति भंगिमायुक्त है तथा मुखाकृति आनन्दमय मुस्कान से परिपूर्ण है। आकृति में उत्तेजना, मादकता व ऐन्द्रिकता है। यह पत्थर के ऊपर खड़ी है। यह यक्षिणी हाथ में पिंजरा लिए तोते को निहार रही है।

सर्वप्रथम आकृति के लिए उपयुक्त पत्थर को लेकर अपने प्रारूप के अनुरूप उस पर रेखांकन किया जाता है। फिर पत्थर के फालतू हिस्से को मोटी छैनी द्वारा मोटे तौर पर तोड़कर निकाला जाता है। पत्थर का ढाँचा तैयार होने के बाद बारीक अंकन के लिए पतली छैनी द्वारा ध्यानपूर्वक हर हिस्से की नक्काशी की जाती है। जिस हिस्से को चिकना करना हो उस पर छैनी के माध्यम से पत्थर के खुरदरेपन को सपाट कर भिन्न-भिन्न पत्थरों से रगड़ा जाता है व मूर्ति को चिकना कर चमकाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 5.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. हाथ में पिंजरा लिए यक्षिणी की मूर्ति .... से बनी है।
2. पतली छैनी द्वारा पत्थर .... की जाती है।

5.3 बुद्ध की खड़ी प्रतिमा

बुनियादी सूचना

गंधार कला के अस्तित्व में अपने के पूर्व जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन की घटनाओं को पाषाण पर उत्कीर्ण किया जाता था। बुद्ध के मानव रूप की मूर्ति के निर्माण के स्थान पर इनकी उपस्थिति को गज, वृषभ, अश्व, बोधिसत्व, छत्र, स्तूप आदि के प्रतीकों से दर्शाया जाता था। किन्तु कुषाण युग तक आते-आते बुद्ध की मानव मूर्ति शिल्पियों का प्रिय विषय बन गई और मथुरा शैली के साथ-ही-साथ गंधार कला-शैली में भी बुद्ध की मानव मूर्तियों के निर्माण की परम्परा चल पड़ी। धार्मिक पृष्ठभूमि और संरचना के आधार पर यह सिद्ध होता है कि प्रथम दृष्टया गंधार और मथुरा की बुद्ध मूर्तियाँ मेल नही खातीं। मथुरा की कला में बुद्ध की मूर्ति के

चित्र 5.3: बुद्ध की खड़ी प्रतिमा

निर्माण में यक्षों और योगियों की मूर्ति को आधार माना गया, किन्तु गंधार मूर्तिकला में निर्मित बुद्ध मूर्तियों में यूनानी सूर्य देव अपोलो की आकृतियों को आधार स्वरूप माना गया है। यूनानी कलाकारों ने भारतीय अभिप्राय से सम्बद्ध बुद्ध की मूर्तियों को अपने आदर्शों पर ही गढ़ा है। इन मूर्तियों में शिल्प की दृष्टि से स्थानक मुद्रा, हाथ में कमल लिए हुए अवलोकितेश्वर, पुस्तक लिए हुए मंजुश्री, घट लिए हुए मैत्रेय को आभूषणों से अलंकृत एवं प्रदर्शित किया गया है। इन बोधिसत्व मूर्तियों के निर्माण में इन्हें राजपुरुष के रूप में प्रदर्शित किया गया है। अनेक मूर्तियों में दाढ़ी-मूँछे भी प्रदर्शित हैं। गंधार कला-शैली के अंतर्गत निर्मित मूर्तियों में आभूषणों का प्रयोग प्रचुरता में किया गया है। बोधिसत्वों की मूर्तियों में अलंकरणों की इतनी बहुलता है कि वे एक विरक्त बौद्ध भिक्षु की अपेक्षा यूनानी सम्राट की प्रतिकृति अधिक लगते हैं। मूर्तियों में आध्यात्मिक दिव्यता के स्पष्टीकरण हेतु प्रभामण्डल का निर्माण किया गया है। प्रभामण्डल की रचना गंधार-कला की महत्वपूर्ण देन है। अनुपम नक्काशी, प्रचुर अलंकरण और प्रतीकों की भी इस शैली में अधिकता है। इस कला की परिधान-शैली भी विशिष्ट है। सलवटों का सूक्ष्म अंकन हुआ है।

शीर्षक	:	**बुद्ध की खड़ी प्रतिमा**
माध्यम	:	सलेटी बालूपत्थर
निर्माण काल	:	गंधार (द्वितीय शताब्दी)
आकार	:	250 से. मी.
संग्रह	:	मीहो संग्रहालय, जापान

सामान्य विवरण

खड़े बुद्ध की यह प्रतिमा विस्तृत प्रभामण्डलयुक्त, ग्रीक शैली के घुंघराले बालों वाली है। ऊपर की तरफ बालों का जूड़ा-सा बंधा है। शरीर पर बड़ी चादर जैसा कोई वस्त्र पहना हुआ है जिसमें सलवटें दिखाने के लिए गहरी लकीरों का प्रयोग किया गया है। इसमें सौन्दर्य को दक्षता से आध्यात्मिक भावबोध के साथ दिखाया गया है। आधे खुले नेत्र, मुखमण्डल पर माधुर्य और कान्ति भाव दर्शाया गया है। लम्बे कान व पीछे प्रभामंडल दिखाकर इसे लौकिक धरातल पर आध्यात्मिक भाव के साथ प्रदर्शित किया है। मूर्ति का एक हाथ टूटा हुआ है व बायाँ हाथ नीचे की तरफ उँगलियों के सूक्ष्म अंकन के साथ दर्शाया गया है। शरीर के रचना विधान पर पूरा ध्यान दिया गया है। शरीर की माँसपेशियों का उतार-चढ़ाव बिल्कुल स्पष्ट है। शरीर के सूक्ष्म अंगों का अंकन किया गया है। सौम्य एवं करुणामयी दृष्टि प्रभावशाली है। सौन्दर्य पक्ष के साथ ही आध्यात्मिक भावबोध को भी सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सर्वप्रथम आकृति के अनुरूप पत्थर लेकर अपने प्रारूप के अनुसार उस पर रेखांकन किया जाता है। फिर पत्थर के फालतू हिस्से को मोटी छैनी द्वारा तोड़ कर निकाला जाता है। पत्थर का ढाँचा तैयार होने के बाद बारीक अंकन के लिए पतली छैनी द्वारा ध्यानपूर्वक हर हिस्से की नक्काशी की जाती है। जिस हिस्से को चिकना करना हो उस पर छेनी के माध्यम से पत्थर के खुरदरेपन को सपाट कर भिन्न-भिन्न पत्थरों के माध्यम से रगड़ा जाता है व मूर्ति को चिकना कर चमकाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. खड़े हुए बुद्ध की मूर्ति का निर्माण काल क्या है?
2. मानव आकृति में अंकन से पहले बुद्ध को किन रूपों में दर्शाया जाता था?

आपने क्या सीखा

मौर्य एवं उत्तर-मौर्य कला

चँवरधारिणी यक्षिणी	हाथ में पिंजरा लिए यक्षिणी	खड़े हुए बुद्ध
बालू पत्थर (माध्यम)	लाल बालू पत्थर (माध्यम)	सलेटी बालू पत्थर (माध्यम)
दीदारगंज, पटना (प्राप्ति स्थल)	मथुरा (प्राप्ति स्थल)	गंधार (प्राप्ति स्थल)

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- मौर्यकालीन मूर्तिकला को ध्यान से देखकर अपनी कलाकृतियों की रंग-संयोजना करते हैं।
- पत्थर पर की गई पॉलिश को देखकर अपनी कलाकृति को चमकदार बनाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. मौर्यकाल और उत्तर-मौर्यकालीन मूर्तिकला की विषयवस्तु का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. मौर्यकाल की मूर्तिकला की विषयवस्तु, कुषाणकाल और गंधार की मूर्तिकला से कैसे भिन्न थी?
3. गंधार और कुषाण मूर्तिकला में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. चँवरधारिणी यक्षी की प्रतिमा का वर्णन कीजिए।

5. 'गंधार मूर्तिकला की आत्मा भारतीय और शैली विदेशी थी' स्पष्ट कीजिए।
6. 'पिंजरा हाथ में लिए यक्षिणी' के बनाने की प्रक्रिया लिखिए।
7. सौंदर्य के दृष्टिकोण से खड़े बुद्ध की प्रतिमा पर टिप्पणी लिखिए।
8. पिंजरा हाथ में यक्षिणी का प्राप्ति स्थल क्या है?
9. गंधार कला की विशेषताएँ लिखिए।
10. खड़े हुए बुद्ध के हाथों के विषय में लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1.	चँवरधारिणी	बालू रेत
2.	मेखला	मोड़ और प्लेटें
3.	आभूषण	सिरबंध

5.2

1. लाल बालूरेत
2. नक्काशी

5.3

1. दूसरी शताब्दी ईसवी
2. मानव रूप में दर्शाने से पूर्व बुद्ध को वृषभ, गज, अवक्ष, बोधिसत्व, स्तूप आदि प्रतीकों से दर्शाया जाता था।

शब्दकोश

स्तूप	बौद्ध भिक्षुओं की अस्थिओं को रखने के लिए स्थान
बलिष्ठ	बलशाली
पार्श्वगत व पृष्ठगत	पीछे का हिस्सा
कारविंग	छैनी द्वारा पत्थर को काटना
मेखला	कमर में पहनने का आभूषण